Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ○

सूरः बकरः , आयत : 184

अनुवाद : हे ईमान लाने वालों! तुम पर रोज़े उसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे, ताकि तुम तक़वा इख़्तियार करो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 10
अंक - 13
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

26 रमज़ान , 1446 हिज्री कमरी, 27 अमान 1404 हिज्री शम्सी, 27 मार्च 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

मैं प्रार्थना करने वाले की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है, अतः चाहिए कि वे भी मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर विश्वास करें ताकि वे मार्गदर्शन प्राप्त करें

अल्लाह का आदेश:

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۗ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ۗ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْئٰنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

"(हे रसूल!) जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पूछें तो (तुम कह दो कि) मैं उनके बहुत करीब हूँ। जब कोई प्रार्थना करने वाला मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ। तो उन्हें चाहिए कि वे भी मेरे आदेश को मानें और मुझ पर विश्वास करें ताकि वे मार्गदर्शन प्राप्त करें।"

रोज़ा रखने की रातों में अपनी पत्नियों के पास जाने की अनुमति है। वे तुम्हारे लिए एक वस्त्र हैं और तुम उनके लिए एक वस्त्र हो। अल्लाह को पता है कि तुम अपने अधिकारों का उल्लंघन कर रहे थे, इसलिए उसने अपनी कृपा से तुम्हारी ओर ध्यान दिया और तुम्हारी इस स्थिति को सुधार दिया। तो अब तुम (बिना संकोच) अपनी पत्नियों के पास जाओ और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित किया है, उसकी खोज करो। और खाओ और पियो, जब तक कि सुबह की सफेद धारी काली धारी से स्पष्ट रूप से अलग न दिखने लगे। इसके बाद (सुबह से) रात तक रोज़े को पूरा करो।

और जब तुम मस्जिदों में एतेकाफ़ (ध्यान साधना) कर रहे हो तो अपनी पत्नियों के पास न जाओ। ये अल्लाह की निर्धारित सीमाएँ हैं, इसलिए इनके करीब भी न जाओ। अल्लाह इस प्रकार लोगों के लिए अपने आदेश स्पष्ट करता है ताकि वे (नुकसान से) बचें।

रोज़ा एक ढाल है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का आदेश:

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ : كُلُّ عَمَلِ بْنِ اٰدَمَ لَهٗ اِلَّا الصِّيَامَ فَاِنَّهٗ لِيْ وَاَنَا اَجْزِيْ بِهٖ ۔ وَالصِّيَامُ جُنَّةٌ فَاِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمِ اَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفُثْ وَلَا يَصْخَبْ فَاِنْ سَابَّهٗ اَحَدٌ اَوْ قَاتَلَهٗ فَلْيَقُلْ : اِنِّيْ صَائِمٌ ۔ وَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ لَخُلُوْفُ فَمِ الصَّائِمِ اَطْيَبُ عِنْدَ اللّٰهِ مِنْ رِيْحِ الْمِسْكِ ۔ لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ يَفْرَحُهُمَا ۔ اِذَا اَفْطَرَ فَرِحَ ۔ وَاِذَا لَقِيَ رَبَّهٗ فَرِحَ بِصَوْمِهٖ ۔

(بخاری کتاب الصوم باب هَلْ يَقُوْلُ اِنِّيْ صَائِمٌ اِذَا شُتِمَ)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इंसान के सारे काम उसके अपने लिए होते हैं, लेकिन रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूँगा। यानी इस नेकी के बदले में मैं उसे अपना दर्शन (दीदार) प्रदान करूँगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि रोज़ा एक ढाल है, इसलिए जब तुममें से किसी का रोज़ा हो तो वह न कोई बेमतलब बात करे, न ही झगड़ा करे। यदि कोई उससे गाली-गलौज करे या झगड़ा करे तो वह बस इतना कहे कि 'मैंने रोज़ा रखा हुआ है'।

उस अस्तित्व की कसम, जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की जान है! रोज़ेदार के मुँह की महक अल्लाह तआला के निकट कस्तूरी से भी अधिक पवित्र और सुगंधित है, क्योंकि उसने यह स्थिति केवल अल्लाह की खातिर अपनाई है। रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ निश्चित हैं। एक खुशी उसे तब मिलती है जब वह रोज़ा खोलता है और दूसरी खुशी तब होगी जब रोज़े की वजह से उसे अल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त होगा।"

यह महीना हृदय को प्रकाशित करने का उत्तम महीना है। इस दौरान अधिकतर आध्यात्मिक अनुभव होते हैं। नमाज़ आत्मा को शुद्ध करती है और रोज़ा हृदय को प्रकाशित करता है।

मगरिब (शाम) की नमाज़ से कुछ ही क्षण पहले रमज़ान का चाँद देखा गया। पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मगरिब की नमाज़ अदा करने के बाद मस्जिद की छत पर चाँद देखने गए और फिर मस्जिद में वापस आकर फ़रमाया, "पिछला रमज़ान ऐसा लगता है जैसे कल ही गया हो।"

"शहर-ए-रमज़ान अल्लज़ी उनज़िला फीहिल कुरआन" से रमज़ान के महत्व का पता चलता है। सूफ़ियों ने लिखा है कि यह महीना हृदय को प्रकाशित करने के लिए सबसे अच्छा महीना है। इस दौरान कई आध्यात्मिक अनुभव होते हैं। नमाज़ आत्मा को शुद्ध करती है और रोज़ा हृदय को प्रकाशित करता है। आत्मा की शुद्धता का अर्थ यह है कि नफ्स-ए-अम्मारा (इच्छाओं से प्रभावित मन) की प्रवृत्तियों से दूरी बनाई जाए और हृदय की रोशनी का अर्थ यह है कि व्यक्ति को ईश्वर का साक्षात्कार प्राप्त हो। कुरआन में "उनज़िला फीहिल कुरआन" इसी ओर संकेत करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि रोज़े का बहुत बड़ा इनाम है, लेकिन बीमारियाँ और अन्य कारण मनुष्य को इस नेमत से वंचित कर देते हैं। मुझे याद है कि युवावस्था में मैंने एक बार सपना देखा कि रोज़ा रखना अहल-ए-बैअत(पैगंबर के परिवार) की परंपरा है। पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मेरे बारे में फ़रमाया: "सलमानु मिन्ना अहलुल बैत" (सलमान हमारे अहल-ए-बैअत में से हैं)।

सलमान का अर्थ "अस-शल्हान" (शांति स्थापित करने वाला) है, जिसका अर्थ यह है कि इस व्यक्ति के माध्यम से दो प्रकार की शांति स्थापित होगी— एक आंतरिक और दूसरी बाहरी। और यह व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियाँ प्रेम और नरमी से निभाएगा, न कि तलवार के द्वारा। चूँकि मेरा मार्ग हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो का मार्ग है, जिन्होंने युद्ध नहीं किया, न कि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो का मार्ग, जिन्होंने युद्ध किया, इसलिए मैंने समझा कि इस सपने में रोज़े की ओर संकेत है।

इसलिए, मैंने छह महीने तक रोज़े रखे। इस दौरान मैंने देखा कि प्रकाश के खंभे आसमान की ओर जा रहे हैं। यह स्पष्ट नहीं था कि ये खंभे धरती से उठ रहे थे या मेरे हृदय से, लेकिन यह सब कुछ केवल युवावस्था में संभव था। यदि मैं उस समय चाहता, तो लगातार चार साल तक रोज़े रख सकता था।

"नशात व ख़ुशी तीस साल तक रहती है, लेकिन चालीस साल आते ही पंख झड़ने लगते हैं।"

अब जब चालीस साल से अधिक हो चुके हैं, तो मैं देखता हूँ कि वह बात नहीं रही। पहले मैं बटाला (एक स्थान) तक कई बार पैदल जाता और लौटता था, लेकिन अब पाँच-छह मील चलना भी कठिन हो गया है। चालीस साल की उम्र के बाद शरीर की गर्मी कम होने लगती है, खून की उत्पत्ति कम होती है और इंसान जीवन में कई मानसिक और शारीरिक कष्ट झेल चुका होता है। अब यह देखा गया है कि यदि भूख को अधिक देर तक सहन किया जाए, तो मन बेचैन हो जाता है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 561, मुद्रित क़ादियान 2003)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जीवन एक खुली किताब की तरह था, जो सबके सामने था। युद्ध शुरू करने से पहले, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सभी को यह आदेश देते थे कि ख़बरदार! किसी बच्चे की हत्या न करना, किसी महिला की हत्या न करना, यहाँ तक कि बिना वजह पेड़ों को भी न काटा जाए। जो व्यक्ति जानवरों को तकलीफ़ में देखना पसंद नहीं करता, वह इंसानों पर कैसे ज़ुल्म और अत्याचार कर सकता है?

एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तीर लगने से घायल हो गए और तीर की वजह से आपके कपड़े फट गए। फिर आपने तीर को निकाला और एक मुट्ठी कंकड़ उठाकर उस किले की तरफ़ फेंकी, जिससे किला हिलने लगा और फिर मुसलमानों ने यहूदियों को पकड़ लिया। अंततः किले पर क़ब्ज़ा हो गया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र शख़्सियत और आपकी इज्ज़त सबसे बढ़कर है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो न्याय और इंसाफ़ का प्रतीक थे, समस्त संसार के लिए रहमत थे। हर वह रिवायत जो इसके विरुद्ध हो, वह स्वीकार्य नहीं हो सकती।

किनाना बिन रबीअ को क़त्ल किया गया, लेकिन उसका कारण एक मुस्लिम सेनापति की हत्या थी, जिसके बदले (क़िसास) में वह मारा गया। यही वास्तविक सच्चाई है।

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वर्णन।

सम्माननीय मास्टर मंसूर अहमद साहिब काहलूँ (वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया में निवासरत) का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा गायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 फ़रवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

खैबर की जंग का वर्णन हो रहा था। अब खैबर के दूसरे किले की फतह का वर्णन करूँगा। यह दूसरा किला, किला सअ़ब बिन मआज़ कहलाता है। इस किले में खैबर के बाकी सभी किलों से ज्यादा खाना, जानवर और साज़ो-सामान था और इसमें पाँच सौ जंगजू रहते थे। हज़रत क़ाब बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि उन्होंने तीन रोज़ तक सअ़ब बिन मआज़ के किले का मुहासिरा रखा। यह एक मज़बूत किला था। हज़रत मुअत्तिब असलमी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि बनू असलम को खैबर में सख़्त भूख का सामना करना पड़ा। बनू असलम ने इत्तिफ़ाक किया कि हज़रत असमा बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में भेजें।

बनू असलम ने हज़रत असमा बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हमारा सलाम पेश करना और अर्ज़ करना कि हमें भूख और कमज़ोरी ने आ लिया है। बहुत बुरा हाल है। हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बनू असलम का सलाम पेश किया। अर्ज़ की कि हमें भूख और कमज़ोरी ने सख़्त परेशान कर रखा है। अतः, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह से हमारे लिए दुआ करें। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दुआ की, फिर फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की, जिसके हाथ में मेरी जान है! मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे मैं आप लोगों को ताक़त दे सकूँ। मेरे पास खाने को कुछ नहीं है। मैं उनका हाल समझता हूँ जो इस वक़्त भूख से निढाल हैं। फिर यह दुआ की : हे अल्लाह! वह किला उनके लिए फतह कर दे जो खाने और चर्बी से भरा पड़ा है। फिर आपने जंग के लिए झंडा हुबाब बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो के हवाले किया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 5, पृष्ठ 121-122, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

इसकी तफ़सील में बयान किया जाता है कि यहूदियों में से एक शख़्स मुबारज़त (आमने-सामने मुक़ाबला) के लिए बाहर निकला, जिसका नाम युशअ़ था। उसने मुक़ाबले के लिए ललकारा तो फ़ौरन हज़रत हुबाब बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो उसके मुक़ाबले के लिए आए। वे क़िताल करते रहे, यहाँ तक कि हज़रत हुबाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे क़त्ल कर डाला। फिर ज़ियाल नामी यहूदी ने मुबारज़त तलब की तो हज़रत अ़म्मारा बिन अक़बा ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो उसके मुक़ाबले के लिए निकले और आगे बढ़कर उस यहूदी के सिर पर क़ारी ज़र्ब लगाई जिससे उसका सिर फट गया। हज़रत अ़म्मारा बिन अक़बा ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: "लो, मैं ग़िफ़ारी जवान हूँ।" तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इसका जिहाद बातिल हो गया, अर्थात उन्होंने उस वक़्त यह क़ौमी नारा लगाया और फ़ख्र का इज़हार किया कि मैं ग़िफ़ारी हूँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : "यह तो अच्छी बात नहीं है, तुमने अपनी बड़ाई बयान की है।" जब यह बात आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में अर्ज़ की गई तो आपने फ़रमाया : "कोई बात नहीं, उसे अजर मिलेगा और तारीफ़ भी की जाएगी। ऐसे मौक़े पर अगर यह कर दिया जाए तो ऐसी बात नहीं है।"

हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तीरअंदाज़ी कर रहे थे और आपका एक भी निशाना ख़ता न गया। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुराए।

हज़रत हुबाब बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने जवानों के साथ किले के अंदर दाख़िल होकर सख़्त जंग करके उसे फतह कर लिया और तमाम असलहा और गल्ले पर क़ब्ज़ा कर लिया। किले का दिफ़ा करने वाले बहुत से यहूदी मारे गए और कई क़ैद हुए। हज़रत मुअत्तिब असलमी रज़ियल्लाहु अन्हो, जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से भूख की वजह से दुआ की दरख़्वास्त लेकर आए थे, वह कहते हैं कि अभी हम वापस न आए थे कि अल्लाह ने क़िला सअ़ब बिन मआज़ पर फतह दे दी। यानी, अभी बातें करके आन्हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से दरख़्वास्त करके हम वापस ही आए थे कि भूख से बुरा हाल था, तो इस दौरान जंग शुरू हुई और फतह भी हो गई।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि क़िला सअ़ब में से जिस क़दर खाने का सामान मिला, वह इतना था कि किसी और क़िले से इतना सामान नहीं मिला। इसमें बहुत सा जौ, खजूरें, घी, शहद, तेल और चर्बी थी। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुनादी ने ऐलान किया: "ख़ुद भी खाओ और अपने जानवरों को भी खिलाओ, और उठाकर कुछ न ले जाना। जो कुछ खाना है, यहीं खाओ।"

(माख़ूज़: फ़तेह ख़ैबर, अल्लामा मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 140, नफ़ीस अकादमी, कराची

सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 5, पृष्ठ 122, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

फिर तीसरे किले का वर्णन है, किला ज़ुबैर बिन अवाम। इसकी विजय का ज़िक्र इस प्रकार मिलता है। इस किले का नाम क़ुल्लह था, जो बाद में हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो के हिस्से में आया, इसलिए इसका नाम किला ज़ुबैर मशहूर हो गया। जब यहूदी नाअम और सअब बिन मआज़ के किले से ज़ुबैर बिन अवाम के किले की तरफ़ भागे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका घेरा डाल दिया। यह किला पहाड़ की चोटी पर था। आपने तीन दिन तक इसका घेरा किए रखा। एक यहूदी जिसका नाम ग़ज़ाल था, वह आया और उसने कहा कि "ऐ अबुल-क़ासिम!" (ग़ैर मुस्लिम इसी लक़ब से बुलाते थे) "आप मुझे अमान दें इस शर्त पर कि मैं आपको ऐसी बात बताऊँगा जिससे आप अहल-ए-नताआ से राहत हासिल कर लेंगे," यानी इस किले पर क़ब्ज़ा कर सकेंगे और आप अहल-ए-शक़ की तरफ़ निकलेंगे। यक़ीनन अहल-ए-शक़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रोब की वजह से हलाक हो चुके हैं। इसके बाद आप दूसरे किले की तरफ़ जा सकते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके अहल और उसके माल पर उसे अमान दे दी। यहूदी ने कहा कि "बेशक अगर आप इस तरह एक महीना भी खड़े रहें तो उनको कोई परवाह नहीं होगी। उनकी ज़मीन के नीचे सुरंगें हैं, वे रात को निकलते हैं और वहाँ से पानी लाते हैं, फिर अपने-अपने किलों की तरफ़ लौट जाते हैं। वे आप से दिफ़ा कर रहे हैं। अगर आप उनके पानी के रास्ते को काट दें तो वे आपके लिए हथियार डाल देंगे।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके साथ गए और यहूद की सुरंगों को काट दिया। जब उनकी पानी की जगह उनसे अलग हो गई तो वे बाहर निकल आए और फिर सख़्त क़िताल (युद्ध) शुरू हो गया। फिर जंग छिड़ गई। उस दिन मुसलमानों में से कुछ सहाबा शहीद हो गए और यहूदियों में से दस आदमी क़त्ल हुए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़तह हासिल की और यह नताआ के किलों में से आख़िरी किला था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नताआ से फ़ारिग़ हुए तो शक़ के किलों की तरफ़ गए। यह किलों का तीसरा ग्रुप था, जैसा कि मैं पहले बयान कर चुका हूँ।

(शरह ज़रक़ानी, भाग 3, पृष्ठ 265, दारुलकुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 122-123, दारुलकुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

यहाँ यहूदी सरदार सलाम बिन मिष्कम की मौत का भी ज़िक्र मिलता है। नताआ के किलों की जंग में सलाम बिन मिष्कम भी मुसलमानों के हाथों मारा गया। सलाम बनू नज़ीर का एक बड़ा सरदार था और यहूद का क़ाएद था लेकिन वह बीमार था, इसलिए उसने अन्य यहूदी सरदारों की तरह जंग में अमली तौर पर हिस्सा नहीं लिया, यानी ख़ुद तलवार और तीर के साथ जंग में शामिल नहीं हुआ। उसके साथियों ने उसे यह तजवीज़ दी कि वह कतीबा के इलाक़े में चला जाए क्योंकि वह ज़्यादा महफ़ूज़ है, लेकिन सलाम बिन मिष्कम ने दायमी मरीज़ होने के बावजूद यह तजवीज़ क़बूल नहीं की, यहाँ तक कि वह नताआ ही में मुसलमानों के हाथों मारा गया।

(सीरत एनसाइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 385, दारुस्सलाम, रियाद)

अगर उसकी बीमारी का वाक़िआ सही है और वह अमली तौर पर जंग करने वाला नहीं था, तो भी उसका क़त्ल इस लिहाज़ से क़ाबिल-ए-एतराज़ नहीं है कि उसने अपने लश्कर को जंग में भेजने के लिए तैयार किया था। उनकी आम निगरानी वही कर रहा होगा। इसलिए इस जंग के माहौल में किसी सहाबी ने उसे भी क़त्ल कर दिया, क्योंकि वह उनके साथ वहाँ मौजूद था। लश्कर के सरदार की बड़ी अहमियत होती है और सरदार के मरने से लश्कर भी हिम्मत हार जाता है। इसलिए इस लिहाज़ से उसका क़त्ल भी कोई क़ाबिल-ए-एतराज़ बात नहीं है।

शक़ के दोनों किलों का घेरा शक़ भी दो या तीन किलों का मजमूआ था और उसकी फ़तह के बारे में इस तरह ज़िक्र है।

शक़ का पहला किला यह दो किले थे। शक़ का पहला किला जिससे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इब्तिदा की, वह उबैक़ा किला था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक चोटी पर खड़े हुए जिसका नाम समवान था। इस पर खड़े होकर आपने किले वालों से क़िताल किया। इब्तिदा में एक यहूदी ने मुबारज़त के लिए बुलाया। उसके मुक़ाबले में हज़रत हबाब बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हो निकले। दोनों ने एक-दूसरे पर हमला किया। हज़रत हबाब ने एक वार से उसका दायाँ बाज़ू बीच से काट दिया और उसके हाथ से तलवार गिर गई। वह शिकस्त खाकर अपने किले की तरफ़ लौट गया। हज़रत हबाब ने उसका पीछा किया और उसकी रीढ़ की हड्डी का पुट्ठा काट दिया। वह गिर पड़ा, तो हज़रत हबाब ने उसे क़त्ल कर दिया।

फिर एक और आदमी निकला और पुकारा कि कौन है जो मुबारज़त करेगा? मुसलमानों में से आले-जहश में से एक शख़्स बाहर आया मगर वह मुक़ाबला करते हुए शहीद हो गया। उस यहूदी ने अपनी जगह पर खड़े होकर फिर मुबारज़त के लिए बुलाया तो उससे हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुक़ाबला किया। हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्होने अपने ख़ुद पर लाल कपड़ा बाँध रखा था। वह यहूदी बड़ा अकड़कर चल रहा था। हज़रत अबू दुजाना जल्दी से आगे बढ़े, उस पर तलवार से वार किया और उसकी टाँग काट दी और उसे क़त्ल कर दिया।

हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो उसका जंगी सामान, ज़िरह और तलवार लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने यह चीज़ें हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्होको इनायत फ़रमा दीं और यहूद मुबारज़त करने से आजिज़ आ गए। अब फिर इसके बाद कोई नहीं निकला। फिर मुसलमानों ने नारे तक़बीर के साथ भरपूर हमला किया और किले में दाख़िल हो गए। मुसलमानों में से सबसे आगे हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्होथे। मुसलमानों ने इस किले में साज़-ओ-सामान, बकरियाँ और खाना पाया। सभी यहूदी भाग गए। वे दीवारें फाँदते हुए जा रहे थे, गोया कि वे हिरन हों। यहाँ तक कि वे सब शक़ के दूसरे किले की तरफ़ चले गए। बहुत तेज़ी से दौड़े।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा के साथ यहूदियों की तरफ़ निकले और उनसे युद्ध हुआ। यहूदियों ने मुसलमानों पर कड़ी तीर-अंदाज़ी और पत्थरबाज़ी की। मुसलमान भी जवाब में यहूदियों पर उसी तरह तीर चला रहे थे, लेकिन यहूदियों के तीर मुसलमानों को अधिक नुक़सान पहुँचा रहे थे क्योंकि वे किले की बुर्जों से तीर चला रहे थे, यानी ऊँचाई से मार रहे थे, जबकि मुसलमान किले के नीचे ठहरे हुए थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी मुसलमानों के साथ यहूदियों पर तीर चला रहे थे। ऐसा मालूम होता है कि यहूदियों का निशाना ख़ास तौर पर वह जगह थी जहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ठहरे हुए थे, क्योंकि वहीं सबसे ज़्यादा तीर गिर रहे थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा के साथ मौजूद थे कि एक तीर आपके कपड़ों से आ टकराया।

एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तीर लगने से ज़ख़्मी हो गए और तीर लगने से आपके कपड़े फट गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीर निकाला, फिर आपने एक मुट्ठी कंकरी ली और उसे क़िले की तरफ़ फेंक दिया, जिससे क़िला हिल गया, यहाँ तक कि मुसलमानों ने यहूदियों को गिरफ़्तार कर लिया। फिर क़ब्ज़ा हो गया।

(फ़तह ख़ैबर, अल्लामा मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 156-157, नफ़ीस अकादमी, कराची)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 123, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

इन तीनों किलों का मुसलमानों ने घेराव किया। इस बारे में लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नताआ और शक़ के किलों को फ़तह कर लिया तो यहूदी कतीबा के तीनों किलों वतीह, सुलालिम और क़मूस – में चले गए। कतीबा के किलों में से सबसे बड़ा क़िला क़मूस था और यह सबसे अधिक सुरक्षित था। यहूदी इन तीनों किलों में क़ैद हो गए और वे अपने किलों से नीचे झाँकते भी नहीं थे, न ही उनमें से कोई मुक़ाबले के लिए बाहर निकला।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चौदह दिन तक इन किलों का घेराव किए रखा, यहाँ तक कि आपने इरादा किया कि उन पर मंजरिक (गुलेल)

लगाई जाए। जब यहूदियों को अपने नष्ट होने का यक़ीन हो गया, यानी जब उन्हें लगा कि उन पर तोप से पत्थर फेंके जाएँगे, तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुलह की माँग की।

किनाना बिन अबू हुक़ैक ने यहूदियों में से एक आदमी को, जिसका नाम शम्माख था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ संदेश लेकर भेजा कि वह आप से बातचीत करना चाहता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इजाज़त दे दी। किनाना बिन अबू हुक़ैक क़िले से नीचे उतरा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुलह का समझौता कर लिया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा को भेजा, तो उन्होंने यहूदियों के माल पर क़ब्ज़ा कर लिया। अर्थात सहाबा ने उनके माल पर क़ब्ज़ा किया और इन किलों में से 100 ज़िरहें, 400 तलवारें, 1000 नेज़े, 500 धनुष और तीरों से भरे तरकश हासिल हुए।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 131, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

(अल् सीरतुन्नबविय्या, इब्न कसीर, भाग 3, पृष्ठ 376, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

क़िला क़मूस की फ़तह के बारे में कुछ और अलग-अलग रिवायतें भी मिलती हैं। कुछ सीरत की किताबों में लिखा है कि इस क़िले का घेराव बीस दिन तक किया गया और आख़िरकार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों यह क़िला यहूदियों के साथ सख़्त मुक़ाबले के बाद फ़तह हुआ।

इसके अलावा, इस क़िले की फ़तह के ज़िक्र में कुछ सीरत लेखकों ने वही घटनाएँ बयान की हैं, जो क़िला नाअम की फ़तह के बारे में दूसरे लेखकों ने लिखी हैं।

(शरह ज़रक़ानी, भाग 3, पृष्ठ 265, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

(सीरत एनसाइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 392-393, दारुस्सलाम, रियाद)

(सबल अल-हुदा, भाग 5, पृष्ठ 124-126, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, बेरूत)

सुलह के शर्तें बहरहाल, यह क़िला फ़तह हो गया और यहूदियों से एक समझौता हुआ। इस समझौते की शर्तें यह थीं:

1. यहूदियों के लिए अनिवार्य होगा कि वे सभी किलों को ख़ाली कर दें और अपना तमाम युद्ध-सम्बन्धी सामान और हथियार वहीं छोड़ दें, ताकि इस्लामी सेना उस पर क़ब्ज़ा कर ले और वह मुसलमानों की संपत्ति का एक हिस्सा बन जाए। यानी यहूदी अपना हथियार मुसलमानों को सौंप दें। आजकल की भाषा में इसे 'सरेंडर' (समर्पण) करना कहते हैं।

2. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, बातचीत के मुताबिक़ यहूदियों की जान की हिफ़ाज़त और उनकी औरतों और बच्चों को ग़ुलाम बनाए जाने से उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे। यानी यहूदी क़त्ल नहीं किए जाएँगे और उनके औरत-बच्चों की हिफ़ाज़त की जाएगी।

3. यहूदियों के लिए ज़रूरी होगा कि वे ख़ैबर से निर्वासित होकर शाम (सीरिया) की तरफ़ चले जाएँ।

4. यहूदियों को ख़ैबर से निर्वासन के समय यह अनुमति होगी कि वे अपनी सवारियों पर जितना माल ले जा सकते हैं, ले जाएँ।

5. यहूदी इस बात का संकल्प करेंगे कि वे अपने गुप्त ख़ज़ानों और संपत्ति की पूरी जानकारी मुसलमानों को देंगे और विजेताओं को सौंप देंगे।

6. यदि यहूदी इस समझौते की किसी भी शर्त का उल्लंघन करें या कोई ऐसा माल छिपाएँ जिसे ज़ाहिर करना अनिवार्य था, तो मुसलमान इस संधि से मुक्त होंगे और यहूदियों की संपत्ति और उनके बच्चे मुसलमानों के लिए जायज़ होंगे।

(फ़तह ख़ैबर, अल्लामा मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 185-186, नफ़ीस अकादमी, कराची)

ख़ैबर की फ़तह के बाद यहूदियों का ख़ैबर में क़याम और यहूदियों को उनकी आधी पैदावार के बदले में खेतों और बाग़ों को देने का ज़िक्र भी मिलता है। लिखा है कि मुआहिदे के मुताबिक़ तो यहूदियों को शाम की तरफ़ जला वतन होना था, मगर यहूदियों ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि उन्हें ख़ैबर में रहने दिया जाए ताकि वे यहां की ज़राअत और खेती-बाड़ी करते रहें, क्योंकि वे इसके बारे में बहुत कुछ जानते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी दरख़्वास्त क़बूल करते हुए उन्हें ख़ैबर में रहने की इजाज़त दे दी ताकि वे ज़राअत का काम करें और उसके बदले में आधा फल हासिल करें। उनसे बड़ी नरमी का सुलूक किया गया। सहीह बुख़ारी की रिवायत में इसका ज़िक्र यूं मिलता है कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर यहूदियों को दिया कि वे उसमें काम करें और वहां खेती-बाड़ी करें और उनके लिए आधा हिस्सा होगा जो वहां पैदा होगा।

(फ़तह ख़ैबर, अल्लामा मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 57, नफ़ीस अकैडमी, कराची)

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मुआमलतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ैबर हदीस 4248)

ख़ैबर में जो सहाबा शहीद हुए उनकी तादाद सतरह (17) थी। उनके नाम ये हैं :

हज़रत रबीअह बिन अक़स रज़ियल्लाहु अन्हो, सक़्फ़ बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत रिफ़ाआ बिन मसूह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत महमूद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू ज़ैय्याह बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हारिस बिन हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अदी बिन मुर्रह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत औस बिन हबीब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उनेफ़ बिन वाइल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मसऊद बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत बिश्र बिन बराअ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत फ़ुज़ैल बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत आमिर बिन अक़वअ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अमारा बिन उक़्बा रज़ियल्लाहु अन्हो, हब्शी ग़ुलाम हज़रत यसार रज़ियल्लाहु अन्हो, और क़बीला अशजअ का एक शख़्स जिसका नाम नहीं लिखा गया।

यहूदियों में से तिरानवे (93) अफ़राद इस ग़ज़वे में क़त्ल हुए, जिनमें से कुछ सरदारों के नाम हैं: हारिस, अबू ज़ैनब, मरहब, उसीर, यासिर, आमिर, किनाना बिन अबी अल-हुक़ैक़।

(तबक़ातुल कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 82, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

(किताबुल मग़ाज़ी, भाग 2, पृष्ठ 160, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

(इम्ताअ अल-इस्माअ, भाग 1, पृष्ठ 323, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

(शरह ज़रक़ानी, भाग 3, पृष्ठ 264, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

ख़ैबर के कुछ मुख़्तलिफ़ वाक़ियात भी बयान हुए हैं, उनमें से एक वाक़िआ किनाना बिन रबीअ के क़त्ल का है। तारीख़ व सीरत की किताबों में वर्णित है कि ख़ैबर फतह होने के बाद जब यहूदियों के साथ मुआहिदा हो गया तो उसके बाद लोग किनाना और उसके भाई रबीअ को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लेकर आए। किनाना पूरे ख़ैबर का सरदार था और हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हो का शौहर था और रबीअ उसका चचाज़ाद भाई था। किनाना के पास यहूदी क़बीला बनू नज़ीर के सरदार हुय्यी बिन अख़तब का ख़ज़ाना था, जिसमें सोने-चांदी के ज़ेवरात इत्यादि थे और ये ज़ेवरात अहल-ए-अरब को उनकी शादी-ब्याह की तक़रीबात पर उजरत पर दिया करते थे।

इन दोनों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोगों का वह ख़ज़ाना कहां है? उन्होंने कहा कि जब हम मदीना से निकले तो उसके बाद धीरे-धीरे वह सारा ख़र्च हो गया। एक रिवायत में यह है कि उन्होंने कहा कि "ऐ अबू क़ासिम! हमने उसे अपनी जंग में ख़र्च कर दिया और अब उसमें से कुछ भी बाक़ी नहीं रहा। हमने इस माल को इसी दिन के लिए जमा किया था।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि मदीना से निकलने का ज़माना कोई बहुत दूर का ज़माना नहीं कि वह सारा माल ख़र्च हो जाए। इन दोनों ने इस बात पर क़सम उठाई कि उनके पास कुछ भी माल नहीं है। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह ख़ज़ाना तुमसे बरामद हो गया तो फिर तुमसे अल्लाह और उसके रसूल का कोई ज़िम्मा न होगा। उन्होंने कहा, "ठीक है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो को गवाह बनाया। इस वक़्त यहूदियों का एक शख़्स उठा और उसने किनाना के पास जाकर कहा, "तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो मांग रहे हैं अगर तुम्हारे पास है तो उन्हें दे दो। या अगर तुम्हें पता है तो बता दो कि कहां है, तुम्हारी जान बच जाएगी, वरना अल्लाह की क़सम! वह ज़रूर इस पर ग़ालिब होकर रहेंगे।"

इब्न अबी अल-हुक़ैक़ ने उसे डांटा और वह यहूदी अलग होकर बैठ गया। यह

एक तारीख़ की किताब में लिखा गया है।

(तबक़ातुल कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 86, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

(तारीख़ुल ख़मीस, भाग 2, पृष्ठ 415, दारुल सादिर, बेरूत)

(किताबुल मग़ाज़ी, भाग 2, पृष्ठ 140, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन दोनों से फ़रमाया कि अगर तुमने मुझसे कोई चीज़ छिपाई और फिर मुझे मालूम हो गया, तो मैं तुम्हारे खून और तुम्हारी औलादों को इसके कारण हलाल समझूंगा। उन्होंने कहा, ठीक है। इतिहास की एक किताब में इस ख़ज़ाने का पता चलने की एक रिवायत संक्षेप में इस तरह बयान हुई है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अंसार में से एक आदमी को बुलाया और कहा कि तुम फलां-फलां मैदान में जाओ, फिर खजूरों के पास आओ, फिर खजूरों को दाईं तरफ से या बाईं तरफ से जो ऊंची हों, उन्हें देखो, जो कुछ वहां हो, उसे मेरे पास ले आओ, यानी उनके नीचे क्या है। इस ख़ज़ाने की क़ीमत लगाई गई तो उसकी क़ीमत दस हज़ार दीनार लगी। वादा ख़िलाफ़ी की वजह से उन दोनों को क़त्ल कर दिया गया और उनके अहल-ए-ख़ानदान को क़ैद कर लिया गया। यह एक रिवायत है।

एक रिवायत में यह बयान हुआ है, यह कहां तक सही है, इसका बाद में विश्लेषण होगा। एक और रिवायत में यूं बयान हुआ है कि इब्ने इसहाक़ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास किनाना को लाया गया और उसके पास बनू नज़ीर का ख़ज़ाना था। उससे ख़ज़ाने के बारे में पूछा गया तो उसने इंकार कर दिया।

(तबकातुल् कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 86, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(शरह ज़रक़ानी, भाग 3, पृष्ठ 266, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास यहूद का एक आदमी लाया गया, उसका नाम सअल्बा था। कुछ जगहों पर यह ज़िक्र है कि सय्या बिन सलाम बिन अबू हुक़ैक को बुलाकर पूछा। उसने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा कि मैंने किनाना को देखा कि वह हर सुबह उन खंडहरों के इर्द-गिर्द घूमता था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सअल्बा के साथ हज़रत जुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हो और कुछ मुसलमानों को भेजा, जहां सअल्बा ने बताया था। वहां खुदाई की गई तो ख़ज़ाना निकल आया।

एक रिवायत में यह है कि कुछ ख़ज़ाना मिल गया लेकिन बाकी नहीं मिला और किनाना ने भी बताने से इंकार कर दिया, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत जुबैर को हुक्म दिया कि किनाना को सज़ा दो। हज़रत जुबैर चकमक पत्थर लेकर आए और उसके सीने पर मारते जिससे आग निकलती। जब वह मरने के करीब हो गया, तब उसने बाकी ख़ज़ाने के बारे में बताया। इस पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किनाना को मुहम्मद बिन मस्लमा के हवाले कर दिया कि वह उसे क़त्ल कर दें। फिर मुहम्मद बिन मस्लमा ने अपने भाई महमूद बिन मस्लमा, जिन पर चक्की का पत्थर गिराया गया था और वे शहीद हो गए थे, उनके बदले में किनाना को क़त्ल कर दिया।

बहरहाल, क़त्ल तो किया गया, लेकिन जिस तरह यह वाक़या बयान किया जाता है, यह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उसवे के खिलाफ़ लगता है। कुछ रिवायतों में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हुक्म से उन दोनों भाइयों को क़त्ल कर दिया गया। एक रिवायत के मुताबिक, किनाना को मुहम्मद बिन मस्लमा ने क़त्ल किया, जबकि उसके दूसरे भाई को बिश्र बिन बराअ के घरवालों के सुपुर्द कर दिया गया और उसे भी बिश्र बिन बराअ के बदले में क़त्ल कर दिया गया। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके माल को हलाल करार दिया और उनकी औलाद को क़ैदी बना लिया।

यह रिवायतें तारीख़ और सीरत की मुअ्तबर किताबों में मौजूद हैं, जैसे कि तारीख़ तबरी, तारीख़ुल ख़मीस, तबकात इब्ने सअद, किताबुल मग़ाज़ी वाक़िदी, सीरत इब्ने हिशाम, सीरत इब्ने इसहाक, सीरत हलबिया और ज़रक़ानी वगैरह। किनाना को इसी वजह से क़त्ल करने का ज़िक्र हदीस की किताब सुनन अबू दाऊद में भी है। लेकिन किनाना के क़त्ल की मुख़्तलिफ वजहें और रिवायतें भी मिलती हैं, जिनसे पता चलता है कि उसके क़त्ल की वजह ख़ज़ाने की निशानदेही न करना नहीं थी।

(सीरत हल्बिया, भाग 3, पृष्ठ 62, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(किताबुल मग़ाज़ी, भाग 2, पृष्ठ 140, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(शरह ज़रक़ानी, भाग 3, पृष्ठ 265, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 698, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(इमताअुल अस्माअ, भाग 1, पृष्ठ 315, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल खराज वल-फै और इमारत, बाब फी हुक्म अर्द ख़ैबर, हदीस नंबर 3006)

बहरहाल, ख़ैबर के इस वाक़ये को मुस्तशरिक़ीन (पश्चिमी विद्वानों) ने भी अपनी किताबों में बयान किया है और फिर ऐतराज़ करने वालों ने अपनी आदत के मुताबिक़ इस्लाम और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुबारक ज़ात पर ऐतराज़ किए हैं। गोया कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को माल और दौलत की लालच थी, या यह दिखाने की कोशिश की कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आप किस तरह के ज़ुल्म और तशद्दुद किया करते थे। ऐतराज़ करने वालों ने अक़्ल और इन्साफ़ से ज़रा भी काम नहीं लिया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी तो सबके सामने एक खुली किताब की तरह थी, जो जंग शुरू करने से पहले सबको हुक्म देते हैं कि ख़बरदार! किसी बच्चे को क़त्ल न करना, किसी औरत को क़त्ल न करना, यहाँ तक कि दरख़्तों को भी बिना वजह न काटा जाए।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-जिहाद व अल-सयर, बाब क़त्ल अन-निसा फ़ी अल-हरब, हदीस 3015)

(सुनन अल-कुबरा लिल-बैहक़ी, भाग 9, पृष्ठ 154, हदीस 18665, मक़तबा अर-रुश्द)

जो जानवरों को भी किसी तकलीफ़ में देखना पसंद नहीं करते, वे इंसानों पर कैसे ज़ुल्म व तशद्दुद कर सकते हैं?

इसी तरह माल-ए-ग़नीमत हासिल करने के लिए जंग करना एक सरासर बेबुनियाद इल्ज़ाम है, और जंग-ए-ख़ैबर तो वह जंग थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना से रवाना होने से पहले ही एलान फ़रमा दिया था कि जो माल-ए-ग़नीमत की उम्मीद या लालच लेकर शामिल होना चाहे, वह हमारे साथ नहीं जाएगा।

(सुबुल अल-हुदा वा अर-रशाद, भाग 5, पृष्ठ 115, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

जिस नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नमूना और उस्वा यह हो, उनके मुतअल्लिक़ जब ऐसी रिवायतें सामने आएँ तो इंसाफ़ का तक़ाज़ा है कि हम अच्छी तरह उन रिवायतों को देख लें, उनकी तहक़ीक़ कर लें और बेशक पहली कोशिश यह होनी चाहिए कि हर हदीस और हर रिवायत को जहाँ तक मुमकिन हो, एहतराम की नज़र से देखा जाए और जिस हद तक हो सके, उनके मज़ामीन की कोई तावील हो सकती हो, तो की जाए। लेकिन बहरहाल, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात-ए-मुक़द्दस और आपकी इज़्ज़त सबसे मुक़द्दम है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो अद्ल व इंसाफ़ के पायकर थे, रहमत-उल-लिल-आलमीन थे। हर वह रिवायत जो इसके मुनाफ़ी हो, वह क़ाबिले-क़बूल नहीं हो सकती।

जबकि मोअर्रिख़ीन और अस्हाब-ए-सयर यह भी बयान करते हैं कि सैकड़ों-हज़ारों अहादीस और रिवायतें बाद के लोगों ने ख़ुद से गढ़ ली थीं, और यह भी मुसल्लम हक़ीक़त है कि इस साज़िश में यहूद का भी दख़ल रहा कि वे ग़लत रिवायतें पेश करते थे।

फिर यही वाक़िआ, जिसमें किनाना और उसके भाई के क़त्ल का बयान किया जाता है, इस पर हमारी तहक़ीक़ी टीम ने भी बहुत अच्छा तजज़िया किया है और रिवायतों की रौशनी में जो बयान किया है, उस पर मुस्तशरिक़ीन (पश्चिमी लेखकों) के ऐतराज़ का भी जवाब दिया है। यह बहुत अच्छा जवाब है। वे कहते हैं कि इस वाक़िआ की अंदरूनी शहादत बता रही है कि बयान करने वालों को जगह-जगह ग़लती लगी है। वे भूल रहे हैं और मुख़्तलिफ़ बातों को मिला-जुला रहे हैं। अगर कोई ऐसा वाक़िआ हुआ भी है, तो एक छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर, मुबालग़ा आमेज़ी के साथ मनफ़ी रंग में बयान किया गया है।

उदाहरणतः, जब यहूद के साथ मुआहदा हो गया और हर क़िस्म की शराइत तय करने के बाद सुल्ह नामा तहरीर हो गया, तो फिर किसी ख़ज़ाने की तलाश ब-ज़ाहिर अजीब लगती है, क्योंकि मुआहदे की रू से यहूद की किसी भी चीज़ पर तसर्रुफ़ और मिल्कियत ख़त्म हो गई थी, सिवाय ख़ैबर की ज़मीन वग़ैरा के। फिर अगर वह ख़ज़ाना मिल गया था, जैसा कि रिवायतों में वर्णित है, तो वह ख़ज़ाना कहाँ

गया? ख़ैबर का जो भी माल-ए-ग़नीमत तक़सीम हुआ, उसकी तमाम तफ़्सीलात किताब-ए-तारीख़ व सियर में मौजूद हैं—घी, चर्बी, खजूर, कपड़े, सामान, मवेशी, नेज़े, तलवारें, तीर, ढालें वग़ैरा। लेकिन कहीं भी यह ज़िक्र नहीं मिलता कि फलाँ को इतना सोना-चाँदी या हीरे-जवाहिरात मिले। बल्कि इसके बरअक्स यह लिखा हुआ मिलता है कि ख़ैबर के अमवाल-ए-ग़नीमत में किसी क़िस्म का कोई सोना-चाँदी नहीं मिला। यह बुख़ारी की रिवायत है।

ख़ज़ाने की तलाश के लिए जो तफ्तीश की गई, इन रिवायतों में सख़्त इख़्तिलाफ़ व इज़्तराब है। किसी रिवायत में है कि किनाना से पूछा गया, किसी में है कि किनाना और उसके भाई दोनों को बुलाया गया, किसी में है कि उनके साथ एक यहूदी से पूछा गया, किसी में है कि हुयय के चचा से पूछा गया। फिर इस सारी तफ्तीश के बाद अगर सज़ा दी जानी चाहिए थी, तो बहुत से मुजरिम क़रार पाते, लेकिन रिवायतों के मुताबिक़ सिर्फ़ दो को सज़ा दी गई अर्थात किनाना और उसका भाई। कुछ रिवायतों के मुताबिक़ सिर्फ़ किनाना को सज़ा दी गई।

बुख़ारी में लिखा है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने अहद-ए-ख़िलाफ़त में ख़ैबर से यहूद की जला-वतनी का इरादा किया, तो उस वक़्त आपके पास अबू अल-हुक़ैक़ का एक बेटा आया। शारिह बुख़ारी अल्लामा इब्न-ए-हजर लिखते हैं कि किनाना का यह भाई हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुके दौर तक ज़िंदा रहा और जला-वतनी तक ख़ैबर में ही मुक़ीम था। इसलिए यह भी बात ग़लत हो गई कि भाई के क़त्ल की। कुछ सियरत निगार बुख़ारी की इस रिवायत से यह इस्तिदलाल करते हैं कि सिर्फ़ किनाना को ही सज़ा दी गई थी।

(माख़ूज़: फत्ह अल-बारी, शरह सहीह अल-बुख़ारी, हदीस 2730, भाग 5, पृष्ठ 411, मतबूआ क़दीमी कुतुब खाना)

(सियरत अल-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, शिब्ली, भाग 1, पृष्ठ 333, मक़तबा इस्लामिया)

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्व-ए-ख़ैबर, हदीस 4234)

बहरहाल, ये सारी बातें जो बयान की गई हैं, जिनमें विरोधाभास थे, इस वजह से ऐसी सभी रिवायतें (विवरण) जिनमें किसी ख़ज़ाने की प्राप्ति के लिए शारीरिक सज़ा का ज़िक्र है, संदिग्ध करार पाती हैं। जिनमें यह घटना बयान हुई है और हकीकत यह है कि यह रिवायत ही सही नहीं है।

चुनांचे, एक प्रसिद्ध जीवनी लेखक अल्लामा शिबली नोमानी लिखते हैं कि ख़ैबर की घटनाओं में जीवनी लिखने वालों ने एक गंभीर ग़लत रिवायत नक़ल की है और वह अक्सर किताबों में नक़ल होकर आम हो गई है, यानी इसे मान लिया गया है और रिवायतों में शामिल कर लिया गया है।

यानी, पहले आपने (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) यहूदियों को इस शर्त पर अमन (सुरक्षा) दिया था कि वे कोई भी चीज़ नहीं छिपाएँगे, लेकिन जब किनाना बिन रबी ने ख़ज़ाने के बारे में बताने से इंकार कर दिया तो आपने हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म दिया कि सख़्ती करके उससे ख़ज़ाने का पता लगाएँ। हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो चकमक जलाकर उसके सीने को दागते रहे, यहाँ तक कि उसकी जान निकलने के क़रीब हो गई। आख़िरकार आपने किनाना को क़त्ल करा दिया और सभी यहूदी औरतें और गुलाम बना लिए गए।

इस रिवायत का यह हिस्सा तो सही है कि किनाना क़त्ल कर दिया गया, लेकिन इसका कारण यह नहीं था कि उसने ख़ज़ाना बताने से इंकार कर दिया था, बल्कि इसका कारण यह था कि किनाना ने महमूद बिन मस्लमा को क़त्ल किया था।

तबरी में साफ़ तौर पर लिखा है कि फिर आपने (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) किनाना को मुहम्मद बिन मस्लमा के हवाले कर दिया, उन्होंने अपने भाई महमूद बिन मस्लमा के बदले में उसे क़त्ल कर दिया।

बाक़ी रिवायत की यह हालत है कि इसे तबरी और इब्न हिशाम दोनों ने इब्न इस्हाक़ से नक़ल किया है, लेकिन इब्न इस्हाक़ ने ऊपर के किसी रावी का नाम नहीं बताया।

मुहद्दिसीन ने "रिजाल" (हदीस के रावियों) की किताबों में यह साफ़ किया है कि इब्न इस्हाक़ यहूदियों से ग़ज़वात (नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की लड़ाइयों) के वाक़यात नक़ल करते थे। बहुत सी रिवायतें उन्होंने यहूदियों से ली हैं।

इस रिवायत को भी उन्हीं नक़ली रिवायतों में से समझना चाहिए क्योंकि यहूदी कभी सही बात नहीं बताएँगे और यही वजह है कि इब्न इस्हाक़ उन रावियों के नाम नहीं लेते।

किसी शख़्स से ख़ज़ाने के बारे में बताने के लिए इतनी सख़्ती करना कि उसके सीने पर चकमक से आग सुलगाई जाए, यह "रहमतुल लिल आलमीन" (संसार के लिए दया रूप) की शान से बहुत ऊँचा है।

वही शख़्स जो ज़हर देने वाले को माफ़ कर देता है, उसे सज़ा नहीं देता, क्या कुछ सिक्कों के लिए किसी को आग में जलाने का हुक्म दे सकता है?

असल घटना बस इतनी थी कि किनाना को इस शर्त पर अमान दी गई थी कि वह किसी भी तरह की बेवफ़ाई और झूठ नहीं बोलेगा। बल्कि रिवायत में है कि उसने यह भी मंज़ूर किया था कि अगर वह कुछ भी ख़िलाफ़ करेगा, तो वह क़त्ल के लायक़ होगा। किनाना ने बेवफ़ाई की, और जो सुरक्षा उसे दी गई थी, वह टूट गई। किनाना ने महमूद बिन मस्लमा को क़त्ल किया था, तो उसे बदले में क़त्ल कर दिया गया।

शायद पहले उसे माफ़ कर दिया जाता, लेकिन जब उसने एक और जगह बेवफ़ाई की, तो उसे इसकी सज़ा दी गई।

(स्रोत: सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अल्लामा शिबली नोमानी, खंड 1, पृष्ठ 284-285, मक्तबा इस्लामिया)

मौजूदा ज़माने के एक अहमदी लेखक सैयद बरकात अहमद साहिब अपनी किताब "रसूल अकरम और यहूद-ए-हिजाज़" में लिखते हैं:

इब्न इस्हाक़ ने बिना किसी सनद के एक क़िस्सा बयान किया है और यह तथ्यों के बिल्कुल ख़िलाफ़ है

पहली बात तो यह है कि किसी को यातना देना और वह भी आग से यातना देना, इस्लामी तालीम के ख़िलाफ़ है।

दूसरी बात यह है कि पूरे ख़ैबर के माल-ए-ग़नीमत (युद्ध में जीती हुई संपत्ति) में इस बरामद ख़ज़ाने की तक़सीम (वितरण) का कोई ज़िक्र नहीं मिलता।

ना ही इस ख़ज़ाने के बैतुल माल (सरकारी खज़ाने) में जमा होने की कोई रिवायत मौजूद है।

इब्न इस्हाक़ ही नहीं बल्कि दूसरे प्राचीन स्रोतों में भी ख़ैबर के माल-ए-ग़नीमत में नक़दी, सोना, चाँदी या इस तरह के अन्य कीमती सामान का कोई ज़िक्र नहीं मिलता।

सारी रिवायतें अनाज, कपड़े, या हथियारों से संबंधित हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो, जो ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के साथ थे, कहते थे कि हमने ख़ैबर को फ़तह किया, लेकिन हमें वहाँ कोई सोना या चाँदी नहीं मिला। (स्रोत: "रसूल अकरम और यहूद-ए-हिजाज़", पृष्ठ 162-163, मक्तबा जामिया लिमिटेड, नई दिल्ली)

किनाना बिन रबी क़त्ल हुआ, लेकिन उसके क़त्ल का कारण एक मुस्लिम सेनापति का क़त्ल था, जिसके बदले में उसे क़त्ल किया गया।

(यह घटनाएँ आगे भी चल रही हैं। यहाँ इन्हीं घटनाओं में एक यहूदी औरत का ज़िक्र भी आता है, जिसने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को ज़हर देने की कोशिश की, लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें बचा लिया।)

चूँकि यह घटना लंबी है, इसकी तफ़सील इंशाअल्लाह आगे बयान की जाएगी।

इस समय मैं एक मरहूम (स्वर्गीय) शख़्स का ज़िक्र करना चाहता हूँ और फिर उनका जनाज़ा ग़ायब (अनुपस्थित) पढ़ाऊँगा।

मरहूम मास्टर मंसूर अहमद साहिब काहलून, पुत्र शरीफ अहमद साहिब काहलून

जो इस समय ऑस्ट्रेलिया में थे, पिछले दिनों उनका देहांत हो गया।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन ।

मरहूम, चौधरी सरदार ख़ान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो, सहाबी हज़रत मसीह मौऊद (अलैहि सलाम) के पोते थे। उन्होंने शिक्षा रबवा में प्राप्त की और बचपन से ही दीन की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(स्रोत: अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 7 मार्च 2025, पृष्ठ 2-6)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

प्रोफेसर शोभना शंकर की हज़ूर अनवर से मुलाकात प्रोफेसर ने बताया कि वह पश्चिमी अफ्रीका के अहमदियों पर एक पुस्तक लिखना चाहती हैं। इस पर हज़ूर अनवर ने फरमाया कि यदि वह पुस्तक लिखना चाहती हैं, तो उन्हें वहां जाकर अहमदियों के साक्षात्कार करने होंगे और खुद जानकारी प्राप्त करनी होगी। विशेष रूप से यदि वह शोध करना चाहती हैं, तो उनकी सहायता की जाएगी। प्रोफेसर की मांग पर हज़ूर अनवर ने कहा कि स्थानीय भाषाओं में अनुवाद के संदर्भ में भी सहायता प्रदान की जाएगी।

प्रोफेसर ने बताया कि वह मुस्लिम नहीं हैं, लेकिन उनकी दादी ने उन्हें सिखाया था कि हिंदू होते हुए भी मुसलमानों का सम्मान करना चाहिए।

एक प्रश्न के उत्तर में हज़ूर अनवर ने बताया कि उन्होंने चार वर्ष घाना के उत्तर में और चार वर्ष दक्षिण में बिताए हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर और दक्षिण में जनजातीय व्यवस्था अलग है और उनकी संस्कृतियां भी भिन्न हैं। उत्तर में मुस्लिम बहुसंख्यक हैं, जबकि दक्षिण में ईसाई अधिक हैं। अहमदिया समुदाय की संख्या विशेष रूप से उत्तर में बढ़ रही है। हमारे मिशन हाउस, स्कूल और अस्पताल मुख्य रूप से दक्षिण में स्थित हैं। साल्ट पांड में हमारा पहला मिशन हाउस और मस्जिद बनी थी और वहीं हमारा मुख्यालय रहा है।

प्रोफेसर ने गेहूं उगाने की योजना के बारे में पूछा, जिस पर हज़ूर अनवर ने फरमाया कि उन्होंने सोचा कि यदि नाइजीरिया में गेहूं उगाया जा सकता है, तो घाना में भी संभव है। उन्होंने वहां इसका प्रयोग किया और यह काफी सफल रहा।

हज़ूर अनवर ने बताया कि वहां हर प्रकार की सब्जियां उगाई जा सकती हैं, बशर्ते कि उचित सुविधाएं उपलब्ध हों।

हज़ूर अनवर के पूछने पर प्रोफेसर ने बताया कि वह अपनी पुस्तक में अहमदिया लड़कियों के स्कूलों पर विशेष ध्यान केंद्रित करना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि कई अफ्रीकी प्रोफेसरों ने उन्हें बताया कि वे अहमदिया स्कूलों में पढ़े थे। अफ्रीका में लड़कियों के लिए भी उच्च गुणवत्ता वाले अहमदिया स्कूल थे, जहां उन्होंने बेहतरीन शिक्षा प्राप्त की।

प्रोफेसर ने कहा कि वह अफ्रीका में अहमदिया प्रिंटिंग प्रेस और अखबारों से भी प्रभावित हैं। पहला इस्लामिक अंग्रेज़ी अखबार अहमदिया जमाअत ने ही शुरू किया था। इस पर हज़ूर अनवर ने फरमाया कि वह अखबार "The Truth" था। प्रोफेसर ने कहा कि वह अपनी पुस्तक में यह दर्शाना चाहती हैं कि अहमदिया जमाअत ने अफ्रीका के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

अंत में, हज़ूर अनवर ने कहा कि अफ्रीका में अहमदिया मुस्लिम महिलाओं और उनकी शिक्षा पर अपने शोध को व्यापक बनाने के लिए प्रोफेसर को सिएरा लियोन और फ्रैंकोफोन देशों का भी दौरा करना चाहिए।

यह मुलाकात 11:22 बजे तक चली। अंत में प्रोफेसर ने हज़ूर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

गाम्बिया के राजदूत के सचिव की मुलाकात

बाद में, कार्यक्रम के अनुसार हज़ूर अनवर अपने कार्यालय में तशरीफ लाए। जहां अमेरिका में गाम्बिया के राजदूत के सचिव सैकू सीसेय साहब ने हज़ूर अनवर अय्यद अल्लाह तआला से मुलाकात का सम्मान प्राप्त किया। हज़ूर अनवर ने उनसे गाम्बिया के हालात के बारे में पूछा। सीसेय साहब ने गाम्बिया में जमाअत की शैक्षिक और चिकित्सा सेवाओं और अन्य योजनाओं व कार्यक्रमों के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि वे जापान में भी रहे हैं और जापानी भाषा भी बोलते हैं। इस पर हज़ूर अनवर ने फरमाया कि नागोया, जापान में हमारी मस्जिद है और उन्हें वहां जाना चाहिए। हज़ूर अनवर ने कहा कि जमाअत गाम्बिया में जो सेवाएं प्रदान कर रही है, वह इंशाअल्लाह जारी रहेंगी। मुलाकात के अंत में, सीसेय साहब ने हज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सम्मान प्राप्त किया।

परिवारों की मुलाकातें

इसके बाद, कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाकातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सत्र में 37 परिवारों के 162 सदस्यों ने अपने प्रिय आका से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़ूर अनवर ने कृपापूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को पेन प्रदान किए और छोटे बच्चों को चॉकलेट दी।

आज मुलाकात करने वाले यह सदस्य मैरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अन्य 18 जमाअतों और क्षेत्रों से आए थे। Albany से आने वाले परिवारों ने 353 मील, Charlotte से 422 मील, Boston से 427 मील, Georgia से 661 मील, और Orlando से आने वाले सदस्य 874 मील की लंबी यात्रा तय करके पहुंचे थे।

आज भी कई ऐसे सदस्य और परिवार थे, जिनकी यह हज़ूर अनवर अय्यद अल्लाह तआला से पहली मुलाकात थी।

Syracuse से आने वाले जमाअत के एक सदस्य ताहिर अहमद साहब ने कहा कि उनकी दुनिया ही बदल गई है। उन्होंने कहा, "इससे अच्छा दिन मेरी ज़िंदगी में नहीं हो सकता। यह मेरी पहली मुलाकात थी।" वह रो रहे थे और कहने लगे, "जब हज़ूर दूर से आते थे, तो हम देख लेते थे, लेकिन आज मैं बहुत करीब था। मैं बता नहीं सकता कि मेरी क्या हालत है।"

Long Island जमाअत से आने वाले एक दोस्त, फातिह बाजवा साहब ने कहा, "मैं शुरुआत में बहुत घबराया हुआ था, लेकिन जैसे ही मैं अंदर गया और हज़ूर अनवर पर मेरी नज़र पड़ी, तो मेरे दिल को बहुत शांति मिली। हमें कल ही मुलाकात के बारे में पता चला। मैं यहाँ मस्जिद में ड्यूटी कर रहा था, और मेरी पत्नी न्यूयॉर्क में लगभग चार सौ मील दूर थी। वह तुरंत ट्रेन से यहाँ पहुंची और हमें मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

Atlanta जमाअत से आने वाले फज़ल इलाही साहब जब मुलाकात के बाद बाहर आए, तो रोने लगे और बोल ही नहीं पाए। बड़ी मुश्किल से कहा, "मुझे अपने जज़्बात पर काबू नहीं है। मुझे यकीन नहीं हो रहा कि मेरी मुलाकात हो गई है। मैं दस साल का था और दुआ करता था कि मेरी भी खलीफ़ा वक़्त से मुलाकात हो। आज 34 साल बाद मेरी यह ख्वाहिश पूरी हुई है। हज़ूर के चेहरे पर सिर्फ नूर ही नूर था। मैं देख नहीं पा रहा था। हज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दी हैं। मेरे बेटे को जन्म के समय कुछ समस्या हुई थी और उसका ऑपरेशन हुआ था। वह वक्फ-ए-नौ है। हज़ूर अनवर ने इस बच्चे को बहुत दुआएं दी हैं।"

मोहम्मद वासिफ साहब जमाअत क्लेवलैंड से आए थे। अपने अनुभव व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, "हम पाकिस्तान में थे, हज़ूर अनवर को टीवी पर देखा करते थे और दुआ किया करते थे कि हमें भी हज़ूर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो। आज अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं कबूल करते हुए हमें यह नेमत अता कर दी। इस मुलाकात से हमारे दिल को सुकून मिला है। हज़ूर अनवर ने हमें नसीहत की कि नमाज़ को कभी न छोड़ें, क्योंकि हम इसमें लापरवाही किया करते थे।"

एक दोस्त अतीक चौधरी साहब बयान करते हैं, "मैं मुलाकात के लिए बहुत देर से इंतजार कर रहा था। हम सुबह सात बजे से आए हुए थे। जैसे ही हम अंदर गए, तो फिर इस दुनिया में नहीं रहे। उस समय मेरे जज़्बात ऐसे थे कि मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। हम हज़ूर अनवर के खुतबे सुनते हैं और टीवी पर उन्हें देखते हैं, लेकिन मुलाकात में जो एहसास था, वह बयान नहीं किया जा सकता। हज़ूर अनवर ने हमें फरमाया कि नमाज़ पढ़ा करें। उन्होंने हमें नमाज़ की पाबंदी की ओर बहुत ध्यान दिलाया।"

बाल्टीमोर जमाअत से आने वाले दोस्त अब्दुल मालिक वली साहब ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, "हम बहुत कुछ सोचकर गए थे, लेकिन वहाँ जाकर कुछ भी नहीं कह सके। जो कहना था, सब भूल गए। हज़ूर ने फरमाया कि 'बेटे की दाढ़ी बड़ी है लेकिन अब्बू की दाढ़ी छोटी है।' अब्बू ने मुझे मुलाकात से पहले ही कहा था कि हज़ूर अनवर यह पूछेंगे कि तुम्हारी दाढ़ी बड़ी और अब्बू की छोटी क्यों है।"

जमाअत विलिंगबोरो से ज़हूर तैय्यब साहब आए थे। उन्होंने कहा, "मैं बयान नहीं कर सकता, मैंने तो कमरे में सिर्फ नूर ही नूर देखा। हज़ूर ने मुझसे बहुत प्यार से बात की। मुझे बहुत सुकून मिला। हज़ूर ने मुझे नसीहत की कि अब जाकर जल्दी शादी कर लो।"

शार्लेट जमाअत से एक दोस्त शरीफ अहमद साहब मुलाकात के लिए आए थे। उन्होंने कहा, "जिंदगी में पहली बार हज़ूर अनवर से मुलाकात हुई है। आज मेरी जिंदगी का सबसे बेहतरीन दिन है। अब पता नहीं कि यह दिन दोबारा नसीब होगा या नहीं।" उनकी पत्नी रोने लगीं और कहने लगीं, "सारी बरकतें हज़ूर के कदमों में बैठने और जमाअत की खिदमत में हैं। मुझे जमाअत की वजह से बहुत बरकतें मिली हैं। मैंने अपने बच्चों को यही सिखाया है कि जमाअत की सेवा करोगे तो तुम्हें बरकतें मिलेंगी। हमारे पास जमाअत के अलावा कुछ नहीं है।" उनका बेटा जामिया अहमदिया कनाडा के सातवें साल में है। उसने कहा, "हज़ूर अनवर ने मुझे नसीहत की कि पहले अपने परिवार के सदस्यों को तबलीग करो। हज़ूर ने मुझे बहुत प्यार दिया।"

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 1 बजकर 20 मिनट पर समाप्त हुआ। बाद में, 1 बजकर 40 मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यद अल्लाह तआला ने मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ लाकर ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें जमाकर पढ़ाईं। (सामूहिक बैअत..)

शेष ..

अहमदियत के केंद्र (मर्कज़) में क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

जब हम इंसाफ की नज़र से देखते हैं, तो पूरे सिलसिला-ए-नबुव्वत में सबसे ऊँचे दर्जे के जांबाज नबी, जीवित नबी और अल्लाह के सबसे प्रिय नबी को केवल एक ही शख्स के रूप में पहचानते हैं—वही नबियों के सरदार, रसूलों का फख्र, तमाम मुरसिलों का सर्ताज, जिनका नाम मुहम्मद मुस्तफा व अहमद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है। जिनकी छत्रछाया में दस दिन चलने से वह रोशनी मिलती है, जो पहले हज़ारों वर्षों तक नहीं मिल सकती थी।

(इरशादाते आलिया सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ जिसकी आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी, और अब कोई मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई महदी नहीं आएगा। वे सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पहचान के तौर पर बताई थीं। आपने दुनिया को, खासकर मुसलमानों को, यह दावत दी कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों को देखो, उन पर गौर करो और समझो कि इसी में सआदत है, इसी में अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों की तामील है।

अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत को अक़्ल और विवेक दे और वे बेवजह की मुखालेफ़त से बाज़ आएं। सोचें कि क्या अल्लाह उनसे नहीं पूछेगा कि तुमने बिना तहक़ीक़ के मुखालेफ़त क्यों की? क्योंकि अक्सर लोग बिना तहक़ीक़ किए सिर्फ़ मौलवियों की बातों पर विरोध करने लगते हैं। कुछ तो ग़ौर करो, अल्लाह तआला मुसलमानों को अक़्ल दे। अल्लाह की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने के लिए हमें वही कोशिश करनी चाहिए, जिसका हमसे तक़ाज़ा किया गया है और जो उसका हक़ है। हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। अल्लाह की तौहीद को क़ायम करने के लिए हर समय हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहें और तब तक चैन से न बैठें जब तक इस मक़सद को पूरा न कर लें, जिसके लिए हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हुए हैं।

अल्लाह तआला क़ादियान में जलसे में शामिल होने वाले हर शख्स को अपनी हिफ़ाज़त और अमान में रखे। उन्हें हक़ीक़ी इस्लामी तालीम पर अमल करने और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इश्क़ और मोहब्बत का इज़हार करने की तौफ़ीक़ दे। वे अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाले बनें और उन तमाम बरकतों को लेकर लौटें, जिनके लिए वे इस जलसे में शामिल हुए हैं।

अहमदियत के केंद्र क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

129वां जलसा सालाना क़ादियान 29 ,28 ,27 दिसंबर 2024 को आयोजित हो कर बखैर ओ ख़ूबी संपन्न हुआ।

तीनों दिनों के जलसा कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग, जिससे देश और विदेश में जलसे से लाभ प्राप्त किया गया।

लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से 63,666 लोगों ने जलसे की कार्यवाही देखी और सुनी।

16,000 से अधिक आशिक़ाने अहमदियत की जलसे में शिरकत।

42 देशों से विभिन्न क़ौमों के अज़ीज़ और ख़वातीन की नुमाइंदगी।

MTA इंटरनेशनल के ज़रिए सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) का रोशन बसीरत से भरा समापन

भाषण। समापन भाषण में इस्लामाबाद (यूके) में जमाअत के अज़ीज़ों का इज्तिमा।

कुछ अफ्रीकी देशों के जलसे और समापन भाषण में उनकी शिरकत। नमाज़-ए-तहज्जुद।

दर्स-उल-क़ुरआन और ज़िक्र-ए-इलाही से मुनव्वर माहौल।

उलमा-ए-किराम के गहरी मालूमात से भरपूर तक़रीर। 9 भाषाओं में कार्यक्रमों का अनुवाद।

जमाअत के लोगों की मालूमात बढ़ाने के लिए तरबियती उमूर पर आधारित डॉक्युमेंट्री और विभिन्न मालूमाती नुमाइशों का आयोजन।

निकाहों के ऐलान। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसे की कवरेज।

पुरसुकून और ख़ुशगवार माहौल में जलसे की तमाम कार्यवाही का मुकम्मल होना।

यह अजीब है, मेरे खुदा, मुझ पर तेरा एहसान। मैं कैसे शुक्र अदा करूँ, ऐ मेरे सुल्तान तेरा।

इसके बाद, मुनीर अहमद हाफिज़ आबादी साहिब, सचिव, मज्लिस कारपरदाज़ कादियान, ने वर्ष 2024 में दिवंगत हुए सत्तर (70) मूसियों के नाम पढ़कर सुनाए ताकि जमाअत के लोग उनकी मग़फिरत के लिए दुआ कर सकें।

सम्मेलन के अध्यक्ष, नाज़िर साहिब आला और अमीर मकामी कादियान ने वार्षिक जलसे की व्यवस्थाओं में सहायता करने वाले उच्चाधिकारियों और सभी सदस्यों का धन्यवाद अदा करने के बाद स्थानीय स्तर पर समापन की दुआ करवाई।

इसके बाद लंदन से जलसे की समापन सभा के संबंध में विशेष प्रसारण प्रारंभ हुआ। जलसे में शामिल होने वाले निष्ठावान सदस्यों में उत्पन्न होने वाले आध्यात्मिक परिवर्तनों, साथ ही संपूर्ण विश्व के जमाअत के सदस्यों की कादियान की यात्रा की इच्छा और जलसे के रुहानी दृश्यों व कादियान के आकर्षक स्थलों से संबंधित एक अत्यंत रोचक डॉक्युमेंट्री एम. टी. ए भारत द्वारा एम. टी. ए इंटरनेशनल से प्रसारित की गई। इसे जलसा गाह और मंच पर बैठे लोगों ने अत्यधिक ध्यान और पूर्ण शांति के साथ देखा और सुना

हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तशरीफ़ आवरी और बुलंद नारे-ए-तकबीर के साथ एम. टी. ए इंटरनेशनल से जलसा सालाना कादियान 2024 की समापन सभा आरंभ हुई। इस अवसर पर अफ्रीका के 8 देशों - टोगो, माली, गिनी कोनाक्री, नाइजर, गिनी-बिसाऊ, सेनेगल, बुर्किना फासो और अमेरिका के वेस्ट कोस्ट में भी जलसा सालाना आयोजित किए जा रहे थे। कादियान दारुल अमान के अलावा इन देशों के सीधा प्रसारण बार-बार दिखाए जाते रहे।

भारतीय समयानुसार ठीक 4 बजे हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला) बुलंद नारों की गूंज में 'एवान मसूर' में तशरीफ़ लाए। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सभी उपस्थितजनों को 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' का तोहफा अता किया। तिलावत-ए-कुरआन करीम मक़रम नसीम अहमद बाजवा साहिब ने की। आपने सूरह अल-अहज़ाब की आयतें 39 से 49 तक तिलावत की और उनका अनुवाद प्रस्तुत किया।

इसके बाद, मक़रम नासिर अली उस्मान साहिब ने हज़रत अकदस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की नज़्म "शान-ए-इस्लाम" से चयनित शेर पेश किए, जिनमें पहला शेर यह था: "वह पेशवा हमारा जिससे है नूर सारा, नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है।"

ठीक 4:20 पर हज़ूर अनवर मिंबर पर विराजमान हुए और 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' का तोहफा अता करने के बाद समापन भाषण का आरंभ किया। तशहुद, तऔज़ और सूरह फातिहा की तिलावत के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:

"हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी मौऊद हूँ, जिसकी आने की भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने की थी। अब कोई और मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई और महदी नहीं आएगा, क्योंकि यही समय था जब अल्लाह तआला ने मुझे भेजा। इस युग में वे सभी हालात प्रकट हुए जिनकी ओर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इशारा किया था।"

उन्होंने लोगों, विशेष रूप से मुसलमानों से आह्वान किया कि वे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की भविष्यवाणियों पर ध्यान दें और समझें कि इन्हीं में उनकी भलाई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उन पर झूठा आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की तौहीन की, जबकि वे वास्तव में उनके सच्चे अनुयायी और प्रेमी हैं।

इसके बाद, हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के विभिन्न उद्धरण प्रस्तुत किए, जिनमें उनके हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से प्रेम और भक्ति की भावना उजागर हुई।

"हम जब न्याय की दृष्टि से देखते हैं तो संपूर्ण नबूवत श्रृंखला में सबसे ऊँचे दर्जे के बहादुर, जीवंत और अल्लाह के सबसे प्रिय नबी को केवल एक व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं, जो नबियों के सरदार, रसूलों की शान, समस्त मुरसलों के प्रमुख हैं। उनका नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा व अहमद मुजतबा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) है। उनके साए में दस दिन चलने से वह रोशनी प्राप्त होती है जो पहले हजार वर्षों तक नहीं मिली।"

"हम कृतघ्न होंगे यदि यह स्वीकार न करें कि वास्तविक तौहीद हमने इसी नबी के माध्यम से प्राप्त की। जीवंत अल्लाह की पहचान हमें इसी महान नबी की रोशनी से मिली और अल्लाह से संवाद का सम्मान भी हमें इसी पूर्ण नबी के माध्यम से प्राप्त हुआ।"

अंत में, हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करते हुए कहा:

"अल्लाह तआला मुसलमान उम्मत को बुद्धि और समझ प्रदान करे और वे बेवजह की विरोधिता से बचें। यह सोचें कि क्या अल्लाह तआला उनसे यह नहीं पूछेगा कि उन्होंने बिना जाँच-पड़ताल केवल मौलवियों के कहने पर विरोध क्यों किया? हमें चाहिए कि हम अपने हर कार्य में यह सिद्ध करें कि हम पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सच्चे आशिक हैं।"

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने समापन दुआ करवाई।

दुआ के बाद, पहले कादियान दारुल अमान से, फिर (1) टोगो, (2) बुर्किना फासो, (3) गिनी बिसाऊ, (4) नाइजर, (5) सेनेगल से जलसे में सम्मिलित लोगों ने अपने परंपरागत अंदाज में अरबी और स्थानीय भाषाओं में तराने पेश किए और खलीफ़त-ए-अहमदिया के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा व्यक्त की।

5:43 पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' का तोहफा अता करके एवान मसूर से विदा ली।

(आख़िरी) जलसा मस्तूरात मोरख़ा 28 दिसंबर 2024

तिथि 28 दिसंबर 2024 को जलसा सालाना क़ादियान के दूसरे दिन के प्रोग्राम सुनने का इंतेज़ाम मस्जिद दारुल अनवार में किया गया था। सराय ताहिर के बेसमेंट में भी मस्तूरात के लिए जलसा सुनने का इंतज़ाम था।

दूसरे सत्र में मस्तूरात का अपना जलसा आयोजित किया गया, जो दोपहर ढाई बजे श्रीमती नसरत बेगम बदर साहिबा, अहलिया मोहतरम मुनीर अहमद साहिब हाफ़िज़ आबादी, पूर्व सदर लजन: इमाअल्लाह क़ादियान की ज़ेर-ए-सदारत शुरू हुआ।

श्रीमती अमतुल हादी शीरीं साहिबा ने तिलावत की। श्रीमती वजीहा बशारत साहिबा ने सैय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मन्ज़ूम कलाम "मिरे मौला, मिरी यह एक दुआ है,

तेरी दरगाह में अज़ व बका है"

ख़ुश-इल्हानी से पेश किया।

पहली तक़रीर "औलाद की तरबियत में माओं का किरदार – सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के इरशादात की रोशनी में" के शीर्षक पर श्रीमती नईमा आरिफ़ साहिबा, पूर्व सदर लजन: इमाअल्लाह सिकंदराबाद ने की।

इसके बाद श्रीमती नसीफा अहमद साहिबा (बंगाल) ने सैय्यदना हज़रत मुसलिह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का कलाम

"ज़िक्र-ए-ख़ुदा पे ज़ोर दे, ज़ुल्मत-ए-दिल मिटाए जा,

गौहर-ए-शब चराग़ बन, दुनिया में जगमगाए जा"

ख़ुश-इल्हानी से पेश किया।

दूसरी तक़रीर "इस्लामी पर्दे की अहमियत और बरकात – सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के इरशादात की रोशनी में" के उन्वान पर श्रीमती सदर साहिबा लजन: इमाअल्लाह भारत ने की। दुआ के साथ प्रोग्राम का इख़्तिताम हुआ।

क़ादियान के साथ अफ्रीकी देशों के जलसे

जलसे के तीसरे दिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के समापन भाषण और दुआ के साथ जलसा सालाना क़ादियान का समापन हुआ। शामिलीन को हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के भाषण का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार रहता है।

अल्लाह तआला के फज़ल और करम से दो दिन की बारिश के बाद तीसरे दिन सूरज ने तेज़ चमक के साथ अपनी रोशनी बिखेरी, जिससे जलसा सालाना का कार्यक्रम बुस्तान-ए-अहमद (जलसा गाह) में हुआ और शामिलीन की प्यास बुझी, अल्हम्दुलिल्लाह। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का भाषण लोगों ने पूरी दिलचस्पी और श्रद्धा के साथ सुना, जलसा गाह पूरी तरह भरी हुई थी।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के भाषण के दौरान अफ्रीका के 8 देशों – टोगो, माली, गिनी कोनाक्री, नाइजर, गिनी-बिसाऊ, सेनेगल, बुर्किना फ़ासो के जलसा गाह भी दिखाए गए। इन देशों के जलसे भी क़ादियान के जलसे के साथ संपन्न हुए

और वे अपने-अपने जलसा गाह में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ का भाषण सुन रहे थे। यह नज़ारा बेहद शानदार और ईमान को बढ़ाने वाला था।

हज़ूर पुरनूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने भाषण के अंत में फ़रमाया:

"इस वक़्त हमारे क़ादियान के जलसे के साथ दुनिया के विभिन्न देशों में जलसे हो रहे हैं। ये सब यहाँ इस उद्देश्य से जमा हुए हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संदेश को समझें और उसे दुनिया में पहुँचाने का प्रयास करें तथा अपनी आत्मिक और नैतिक सुधार की भी कोशिश करें। अल्लाह तआला उन सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और वे उन तमाम बरकतों को प्राप्त करें जिनके लिए वे इस जलसे में शामिल हुए हैं।"

शोबा-ए-तरबियत (शिक्षा विभाग)

मोरख़ा 24 दिसंबर 2024 – 1 जनवरी 2025

मस्जिद अक़्सा और मस्जिद अनवार में तहज्जुद की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की गई। जलसे के तीनों दिन क़ादियान की सभी मस्जिदों में तहज्जुद की नमाज़ का विशेष प्रबंध किया गया।

नए साल के आगमन की मुनासबत से 1 जनवरी को क़ादियान की सभी मस्जिदों में तहज्जुद की विशेष नमाज़ अदा की गई, जिससे जलसे में आए मेहमानों ने भी विशेष रूप से लाभ उठाया। तहज्जुद की नमाज़ के लिए शोबा-ए-तरबियत की ओर से लोगों को जगाने का इंतज़ाम किया गया था। दरूद शरीफ़ और पाकीज़ा अशआर (भक्ति गीत) पढ़कर लोगों को नमाज़ के लिए जगाया गया।

नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद "तफ़्सीर-ए-कबीर" से क़ुरआन मजीद का पाठ पढ़ाया गया।

क़ादियान के सभी मोहल्लों और जलसा गाह में शिक्षाप्रद बैनर लगाए गए।

निकाहों की घोषणाएँ

जलसे के अवसर पर लोगों की यह इच्छा होती है कि क़ादियान की पवित्र भूमि में उनके बच्चों के निकाहों की घोषणा हो।

इसी कारण जलसे के दूसरे दिन (नमाज़-ए-मग़रिब व इशा के बाद) मस्जिद अक़्सा में निकाहों की घोषणाएँ की गईं।

शोबा-ए-तरजुमानी (अनुवाद विभाग)

अचानक बारिश के कारण जलसा गाह से मस्जिद अक़्सा में कार्यक्रमों को स्थानांतरित करना पड़ा, जिससे पहले दिन (27 दिसंबर) को केवल तीन भाषाओं (मलयालम, तमिल, बांग्ला) में अनुवाद किया गया।

दूसरे दिन (28 दिसंबर) को चार भाषाओं (मलयालम, तमिल, बांग्ला और रूसी) में अनुवाद किया गया।

तीसरे दिन (29 दिसंबर) को नौ भाषाओं में अनुवाद का प्रबंध किया गया:

अरबी, रूसी, इंडोनेशियन, अंग्रेज़ी, मलयालम, तमिल, तेलुगु, बांग्ला, कन्नड़

1250 से अधिक पुरुषों और महिलाओं ने इस सेवा का लाभ उठाया।

जलसे के सभी कार्यक्रमों, विशेष रूप से हज़ूर अनवर के समापन भाषण का अनुवाद इन भाषाओं में किया गया।

महिलाओं ने भी मर्दाना जलसा गाह के कार्यक्रम की 9 भाषाओं में की गई व्याख्या से लाभ प्राप्त किया।

इस वर्ष मलयालम, तमिल और बांग्ला के अलावा पहली बार रूसी भाषा में भी लाइव स्ट्रीमिंग प्रसारित की गई। अल्हम्दुलिल्लाह।

लाइव स्ट्रीमिंग

जलसे की कार्यवाही लाइव स्ट्रीमिंग के ज़रिए प्रसारित की गई, जिससे न केवल भारत की जमाअतों ने भरपूर लाभ उठाया, बल्कि विदेशों में भी जलसे का कार्यक्रम देखा गया।

उर्दू – 52,000 दर्शक, मलयालम – 5,700 दर्शक, तमिल – 3,500 दर्शक, बांग्ला – 1,700 दर्शक, रूसी – 766 दर्शक

शोबा-ए-ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ (सेवा विभाग)

जलसा सालाना क़ादियान के एक महत्वपूर्ण विभाग "शोबा-ए-ख़िदमत-ए-ख़ल्क़" के अंतर्गत अनुशासन और सुरक्षा संबंधी ड्यूटियाँ अंजाम दी जाती हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों से 460 ख़ुद्दाम (स्वयंसेवक)

क़ादियान के 230 ख़ुद्दाम ने इस विभाग में सेवाएँ दीं

अंसार (वरिष्ठ सदस्यों) की एक टीम और लजन: इमाअल्लाह की एक टीम ने भी इस विभाग के तहत सेवाएँ अंजाम दीं

प्रमुख सेवाएँ:

सभी मेहमानों की रजिस्ट्रेशन और पहचान पत्र वितरण, जलसा गाह, दारुल मसीह, बहिश्ती मक़बरा में प्रवेश चेकिंग, मस्जिदों में नमाज़ के लिए सफ़बंदी और व्यवस्था, सड़कों और गलियों में ट्रैफ़िक प्रबंधन व पार्किंग का इंतज़ाम, जलसा गाह में मेहमानों को पानी पिलाने की सेवा

24 घंटे सुरक्षा ड्यूटी

इसके अलावा हेल्प डेस्क, लॉस्ट एंड फ़ाउंड, सूचना व घोषणाएँ, प्राथमिक चिकित्सा (फ़र्स्ट एड) आदि के लिए भी ख़ुद्दाम ने सेवाएँ दीं।

लवाए अहमदियत (अहमदिया ध्वज) को विशेष सम्मान और सुरक्षा व्यवस्था के साथ जलसा गाह लाया गया और पुनः वापस ले जाया गया।

MTA क़ादियान – लाइव अरबी प्रोग्राम

"इस्मऊ सौतुस-समा – जा'अल मसीह, जा'अल मसीह"

यह लाइव कार्यक्रम 19 से 21 दिसंबर 2024 (गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार) को प्रसारित हुआ।

समय: रात 10:30 बजे से 12:30 बजे तक (भारतीय समयानुसार)

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले:

मोहतरम मुहम्मद शरीफ़ ऊदा साहिब (अमीर जमाअत अहमदिया कबाबीर)

मोहतरम मुहम्मद ताहिर नदीम साहिब (अरबी डेस्क, लंदन)

मोहतरम अब्दुल क़ादिर मुदल्लिल साहिब (अमीर जमाअत, फ़लस्तीन)

इस कार्यक्रम में "हमदर्दी-ए-ख़ल्क़" के विषय पर चर्चा की गई। ★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान) ★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

अमेरिका में तैनात सिरा-लियोन के राजदूत और गेम्बिया के राजदूत के सचिव की हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात और विभिन्न विषयों पर चर्चा।

न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग की प्रोफेसर की मुलाकात।

अमेरिका के दूरदराज इलाकों से आए जमाअत के सदस्यों द्वारा अपने प्यारे इमाम से मुलाकात के बाद उनके अनुभव।

एम.टी.ए टेलीपोर्ट का निरीक्षण।

सामूहिक बैअत का ईमान को मज़बूती देने वाला आयोजन।

वाकफात-ए-नौ और वाकफीन-ए-नौ की हज़ूर-ए-अनवर के साथ अलग-अलग मुलाकातें और विविध विषयों पर मार्गदर्शन।

"एक दोस्त, एहतिशामुल हसन साहब, रब्वाह से आए थे। जब उन्होंने अपना परिचय करवाया, तो हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके भाई और रिश्तेदार तो जर्मनी में भी हैं, यू.के. में भी हैं, और आयरलैंड में भी हैं। उन्होंने कहा कि मैं रब्वाह में एफ.एस.सी कर रहा था और अब यहां आ गया हूं। मेरी कामयाबी के लिए दुआ करें। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाए।"

एक दोस्त श्रीलंका से आए थे। उन्होंने कहा कि हमारे केस रिजेक्ट हो गए थे। हज़ूर अनवर की हिदायत पर जमाअत ने हमारे लिए बहुत कोशिश की। अब हम यहां बैठे हैं और शुक्रिया अदा करते हैं। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि वहां जो हालात खराब हुए थे, उससे पहले ही आप निकल आए। इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि हां, हम पहले ही आ गए थे।

एक नौजवान ने अर्ज़ किया कि मैं 24 साल का हूं, शादी करके आया हूं, स्कूल का डिप्लोमा ले रहा हूं। फिर आगे और पढ़ाई करनी है। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला कामयाब करे।'

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मैं पाकिस्तान के वहारी से आया हूं। आज यहां सिर्फ हज़ूर अनवर का दीदार करने आया हूं। एक बुजुर्ग ने माइक पकड़ा और अर्ज़ किया कि मैं पीछे बैठा था। मुझे हज़ूर सही से नजर नहीं आ रहे थे, तो मैंने माइक सिर्फ इसलिए पकड़ा है ताकि खड़ा होकर हज़ूर का दीदार कर सकूं। वरना मेरा कोई प्रश्न या अर्ज़ नहीं है।

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मेरा बेटा 11 साल से मलेशिया में है। उसके लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उसकी मुश्किलें दूर करे और हमारे मिलने का सामान पैदा करे। हज़ूर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाए।'

एक नौजवान ने अपनी पढ़ाई का वर्णन करते हुए और आगे की पढ़ाई के लिए राय मांगी। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'मेडिसिन करो और दुनिया के काम आओ।'

एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि श्रीलंका से आया हूं। यहां काम भी कर रहा हूं। हज़ूर अनवर ने उस नौजवान को हिदायत दी कि शादी कर लो।

एक दोस्त ने बताया कि श्रीलंका में 8 साल रहकर आया हूं। हालात काफी खराब रहे और बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जब इस तरह सफर पर निकलते हो तो मुश्किलें आती हैं। अब आप यहां पहुंच गए हो। हमेशा अपने दीन को मुकद्दम रखने का अहद करो। अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाता रहेगा। इबादत का हक अदा करो, यह न हो कि अमेरिका आकर दुनिया में डूब जाओ।

एक नौजवान ने अर्ज़ किया कि मैं श्रीलंका से आया हूं। हज़ूर अनवर ने नसीहत करते हुए फ़रमाया, 'शादी करो और हमेशा अल्लाह को याद रखो।'

एक शख्स ने अर्ज़ किया कि मैं बर्मा से आया हूं। यहां रिफ्यूजी केस किया है। वहां लेक्चरर था और अब यहां पीएचडी कर रहा हूं। हज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या बीवी-बच्चे साथ हैं। उन्होंने कहा, 'हां, साथ हैं।' हज़ूर ने फ़रमाया, 'अल्लाह तआला फज़ल फ़रमाए।'

एक दोस्त ने हज़ूर अनवर से अपने यहां कयाम के बारे में बात की। हज़ूर ने फ़रमाया, 'अब आप यहां रहना चाहते हैं या वापस जाना चाहते हैं। पैर जमा लो। अगर जॉब की ऑफर हुई है, तो उसे स्वीकार कर लो और यहीं रहो।'

एक बुजुर्ग ने अर्ज़ किया कि मैं पाकिस्तान से आया हूं। मेरी नज़र कमज़ोर होती जा रही है और मेरा दायां घुटना खराब हो गया है, वह काम नहीं करता। इस पर हज़ूर अनवर ने पूछा, 'आपकी उम्र कितनी है?' उन्होंने अर्ज़ किया, '92 साल।' इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, 'फिर तो अब घुटने खराब ही होने हैं।'"

जमाअत के सदस्यों के अनुभव

मुलाकात करने वाले यह सदस्य मेरीलैंड (Maryland) की स्थानीय जमाअत के अलावा अलग-अलग 27 जमाअतों और इलाकों से आए थे। इनमें से कुछ ने बहुत लंबा और कठिन सफर तय किया था।

Miami से आने वालों ने 1056 मील, Los Angeles से आने वालों ने 2670 मील और Silicon Valley से आने वालों ने 2845 मील का सफर तय कर अपने प्यारे आका से मुलाकात की।

मुलाकात के बाद, एक दोस्त, अतहर अहमद नवीद साहब, जो नॉर्थ वर्जीनिया से आए थे, कहने लगे, "अब मुझे और क्या चाहिए। अल्लाह तआला ने मुझे मुलाकात का सौभाग्य दिया है। मैं अल्लाह से इससे अधिक कुछ नहीं मांग सकता।"

एक और दोस्त, फ़रहान साहब, ने बताया, "जैसे ही हज़ूर आकर तशरीफ़ फ़रमा हुए, दिल की सारी टेंशन दूर हो गई। मुझे तो अपनी सांसों की भी आवाज़ नहीं आ रही थी। मेरे दिल की ख्वाहिश अल्लाह तआला ने पूरी कर दी। मेरे लिए तो यह बहुत बड़ी बात थी।"

नईम अहमद साहब, जो Harrisburg जमाअत से आए थे, कहने लगे, "मैं तो बस हज़ूर को देखता रहा और दुआएं करता रहा। मेरी हज़ूर से मिलने की ख्वाहिश अल्लाह तआला ने पूरी कर दी।"

तक़ी अहमद बाजवा साहब, Harrisburg जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "मेरे बेटे की उम्र दो साल है। मुझे उसके साथ मुलाकात का मौका मिला। मैंने दुआ के लिए कहा। लेकिन जब मुझे माइक मिला, तो हज़ूर का जलाल इतना था कि मैं कुछ बोल ही नहीं सका।"

एक दोस्त, मोहम्मद अज़हर ताहिर साहब, साउथ वर्जीनिया से आए थे। उन्होंने कहा, "यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। हज़ूर के चेहरे पर बहुत नूर था। उसे देखकर इंसान सब कुछ भूल जाता है। मैंने अपने परिवार के लिए दुआ की अर्ज़ की।"

ज़िया-उर-रहमान साहब, Harrisburg जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "मैं थोड़ा ऊंचा सुनता हूं, इसलिए आवाज़ साफ नहीं आई। लेकिन मैंने सारा वक्त हज़ूर को ही देखा। मैं अपने जज़्बात और अहसासात वर्णन नहीं कर सकता, यह मेरे शब्दों से बाहर है।"

नासिर समी साहब, नॉर्थ वर्जीनिया से आए थे। उन्होंने कहा, "हज़ूर के सामने ऐसा महसूस हो रहा था जैसे एक 'मजलिस-ए-इरफान' हो रही हो। हज़ूर का यह फ़रमाना कि 'अल्लाह तआला फज़ल करे', हमारे लिए बहुत सुकूनदायक होता है। इससे दिल को बहुत तसल्ली होती है।"

एक युवा, एहतेशामुल हसन साहब, साउथ वर्जीनिया जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "हज़ूर से मिलने की बहुत ख्वाहिश थी। हज़ूर मुझे दो बार ख्वाब में आ चुके हैं।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 27 March 2025 Issue No. 13

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

मेरे वालिद साहब ने भी ख्वाब में हज़ूर को देखा था। आज मुलाकात में मैंने बस हज़ूर का चेहरा ही देखा। मैंने हज़ूर को अपनी अंगूठी दी। हज़ूर ने अपनी अंगूठी से उसे मसल कर वापस दी। मैं अपने आप को बहुत खुशनसीब इंसान समझता हूं।"

पीर मुइनुद्दीन शाह साहब, फिलाडेल्फिया जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "हज़ूर ने मुझसे पूछा कि तुम किस इलाके के पीर हो। मैंने अर्ज़ किया कि मैं सूफी अहमद जान साहब के परिवार से हूं। मुझे यह भी नहीं पता था कि मेरे एक करीबी रिश्तेदार, जो हाल ही में अमेरिका आए हैं, वह भी इस मुलाकात में शामिल हैं। हज़ूर ने ही मुझे बताया कि वह यहां मौजूद हैं। यह हज़ूर की बरकत है कि न केवल मेरी हज़ूर से पहली मुलाकात हुई, बल्कि अपने रिश्तेदार से भी पहली बार मिल सका।"

पुरुष सदस्यों के साथ यह समूह मुलाकात शाम 6:45 बजे तक जारी रही।

लजना इमाइल्लाह के समूह की सामूहिक मुलाकात

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, लजना हॉल में तशरीफ़ लाए, जहां लजना के समूह ने सामूहिक रूप से हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस मुलाकात में कुल 245 महिलाएं और बच्चियां शामिल थीं, जो अमेरिका की विभिन्न 28 जमाअतों से आई थीं।

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि जो महिलाएं कोई प्रश्न करना चाहती हैं या कुछ कहना चाहती हैं, वे अपने हाथ उठाएं। इस पर महिलाओं ने अपने हाथ उठाए। ज़्यादातर महिलाओं ने अपना परिचय दिया और अपने परिवार का इतिहास बताया। कुछ महिलाओं ने अपने परिवार के लिए दुआ की अर्ज़ की। वहीं, कुछ छात्राओं ने अपनी पढ़ाई के संबंध में हज़ूर-ए-अनवर से मार्गदर्शन की दरख्वास्त की। इनमें हेल्थकेयर, कानून, कृषि, और मेडिकल की छात्राएं शामिल थीं।

कुछ नवविवाहित महिलाओं ने हज़ूर-ए-अनवर से दुआ और नसीहत की अर्ज़ की। कुछ महिलाओं ने अपनी बेटियों के विवाह से संबंधित मामलों पर दुआ की दरख्वास्त की।

कुछ महिलाओं ने अपने सपनों के बारे में बयान किया, जिस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आपको नियमित रूप से दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिए।

महिलाओं के इस समूह की मुलाकात शाम 7:25 पर समाप्त हुई।

नौमुबाईन के समूह की सामूहिक मुलाकात

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दोबारा मस्जिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ़ लाए, जहां नौमुबाईन के समूह ने हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाया। (विस्तृत रिपोर्ट यहां देखी जा सकती है।)

यह बैठक रात 8:10 पर समाप्त हुई। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर कुछ समय के लिए अपने कार्यालय में तशरीफ़ ले गए।

रात 8:35 पर हज़ूर-ए-अनवर मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाए और वहां नमाज़-ए-मगरिब और नमाज़-ए-ईशा को जोड़कर पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद, हज़ूर-ए-अनवर अपनी रहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

अमेरिका का सत्रहवां दिन – 12 अक्टूबर 2022, बुधवार

अमेरिका में तैनात सिएरा लियोन के राजदूत और गाम्बिया के राजदूत के सचिव की हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात और विभिन्न विषयों पर चर्चा। न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग की प्रोफेसर की मुलाकात। अमेरिका के दूरदराज इलाकों से आए जमाअत के सदस्यों द्वारा अपने प्यारे इमाम से मुलाकात के बाद उनके अनुभव

एम.टी.ए टेलीपोर्ट का निरीक्षण।

सामूहिक बैअत का ईमान को मज़बूती देने वाला आयोजन।

वाकफात-ए-नौ और वाकफीन-ए-नौ की हज़ूर-ए-अनवर के साथ अलग-अलग मुलाकातें और विविध विषयों पर मार्गदर्शन।

सुबह 6:15 बजे हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, "मस्जिद बैतुर्रहमान" तशरीफ़ लाए और नमाज-ए-फजर अदा की। नमाज के बाद हज़ूर अपनी रहाइशगाह पर लौट गए।

सुबह के समय, हज़ूर ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहे।

अमेरिका में तैनात सिएरा लियोन के राजदूत की मुलाकात

प्लान के अनुसार, सुबह 11 बजे हज़ूर-ए-अनवर मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए। यहां अमेरिका में सिएरा लियोन के राजदूत, ऑनरेबल सिद्दीक़ अबूबकर वाई साहब, हज़ूर से मुलाकात के लिए उपस्थित हुए।

राजदूत ने जमाअत का आभार व्यक्त करते हुए कहा, "जमाअत अहमदिया सिएरा लियोन में स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में लगातार हमारी मदद कर रही है और हमें जमाअत का सहयोग प्राप्त है।"

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "यह हमारा कर्तव्य है।"

राजदूत ने बताया कि बचपन में उन्हें अहमदिया स्कूल में दाखिला नहीं मिल सका था क्योंकि वहां दाखिले के लिए मापदंड पर खरा उतरना जरूरी था, और वे उस समय उन मापदंडों को पूरा नहीं कर सके थे।

हज़ूर-ए-अनवर ने देश की अर्थव्यवस्था और आर्थिक स्थिति के बारे में पूछा कि देश की सबसे बड़ी आय का स्रोत क्या है। इस पर राजदूत ने बताया कि सिएरा लियोन एक कृषि प्रधान देश है। हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आप कृषि पर अधिक ध्यान दें। एक मॉडल फार्म बनाएँ ताकि लोगों को पता चले कि कृषि को और बेहतर कैसे किया जा सकता है। आप लोग पुराने तरीकों पर निर्भर हैं। अब नई तकनीक अपनाएँ। आधुनिक मशीनरी का इस्तेमाल करें और आधुनिक तरीकों से खेती करें।

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि वहाँ महिलाएँ पुराने औज़ारों की मदद से छोटे स्तर पर कसावा और कुछ अन्य फसलें उगाती हैं। अपनी जरूरत पूरी करने के लिए यह भी ठीक है, लेकिन आपको बड़े पैमाने पर काम करना चाहिए।

हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि सिएरा लियोन की जमीन बहुत उपजाऊ है। हज़ूर-ए-अनवर ने जब यह पूछा तो राजदूत ने बताया कि अमेरिका में सिएरा लियोन के लगभग साढ़े चार लाख लोग रहते हैं। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह तो एक बड़ी संख्या है।

यह मुलाकात लगभग दस मिनट तक चली। मुलाकात के अंत में राजदूत ने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदाहुल्लाह के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

प्रोफेसर शोभना शंकर की मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार, बाद में प्रोफेसर शोभना शंकर ने हज़ूर से मिलने का सम्मान प्राप्त किया। वह स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क में इतिहास की प्रोफेसर हैं और भारत से संबंधित हैं। इतिहास के क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता अफ्रीका में विभिन्न धर्मों, अल्पसंख्यक समुदायों और अंतरराष्ट्रीय मानव कल्याण से संबंधित है।

प्रोफेसर ने बताया कि वह कुछ साल पहले घाना में भी रह चुकी हैं और वहां कुछ समय बिताया था। इस पर हज़ूर ने फरमाया कि उन्होंने घाना में एक लंबा समय गुज़ारा है। इस पर प्रोफेसर ने कहा कि भले ही हज़ूर ने बहुत पहले घाना छोड़ दिया था, लेकिन उनका काम आज भी वहां जीवित है और उनकी सेवाएं अब भी जारी हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad